कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन.....

दिनांक .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

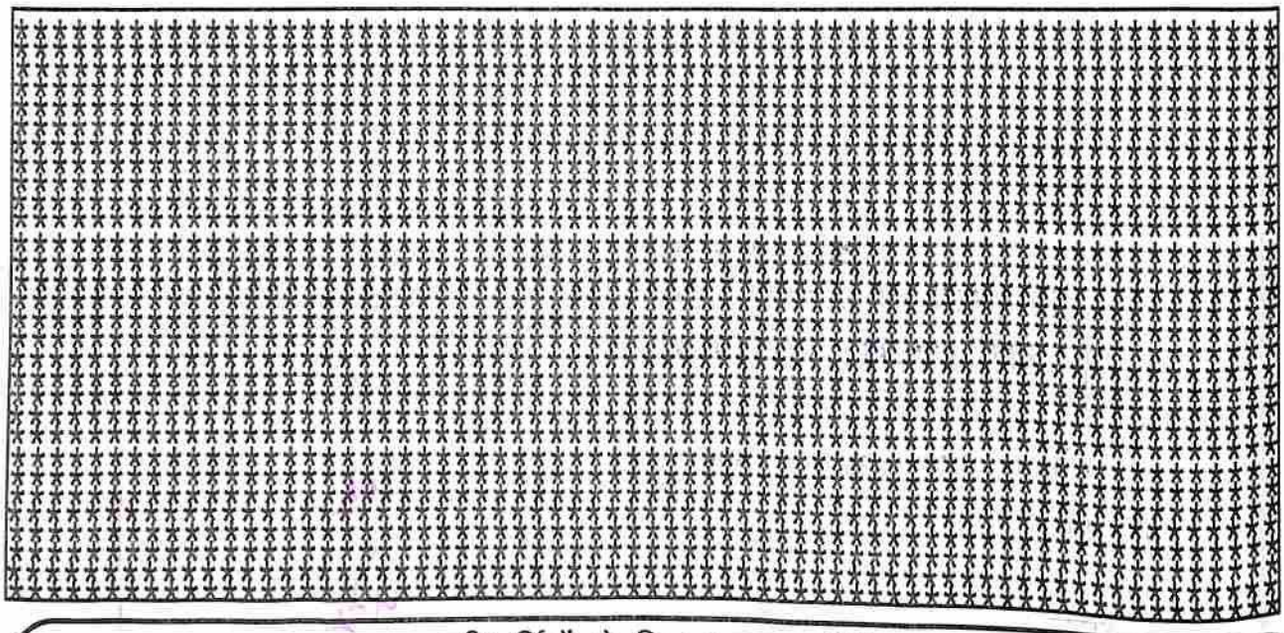

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(1) अनन्तरं सर्वे जालेन ------- पश्चात् धावनम् अकरोत् ।

प्रसङ्ग- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'संघे: शक्ति' शीर्षक पाठ से लिया गया है। मूलत: यह पाठ 'हितोपदेश' ग्रन्थ के 'मित्रलाभ' परिच्छेद से उद्धृत है। इस गद्यांश में कबूतरों के जाल को लेकर उड़ जाने तथा इस प्रकार सिद्धि प्राप्त करने का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद- इसके पश्चात् सभी (कबूतर) जाल में बँध गए। उसके बाद जिसके कहने पर वहाँ बैठे थे, उसका सभी तिरस्कार करने लगे। उसके तिरस्कार (निन्दा) को सुनकर चित्रग्रीव ने कहा "यह इसका दोष नहीं है। विपदा के समय घबरा जाना ही कायर पुरुष का लक्षण होता है। अब यहाँ धैर्य रखकर उपाय सोचना चाहिए। अब भी ऐसा किया जा सकता है। सभी एकमत होकर जाल को लेकर उड़ जाएँ।" ऐसा विचार करके सभी पक्षी जाल को लेकर उड़ गए। उसके बाद वह व्याध (शिकारी) जाल को लेकर उड़ते हुए उनको (कबूतरों को) दूर से देखकर पीछे दौड़ने लगा।

(2) विद्या विवादाय धनं ------- दानाय च रक्षणाय ।

प्रसङ्ग- प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' में संकलित 'सुभाषित रत्नानि' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इस पद्यांश में दुर्जन और सज्जन की विद्या, धन और शक्ति के प्रयोग में अन्तर का वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद- दुर्जन व्यक्ति की विद्या या ज्ञान विवाद करने के लिए, धन घमण्ड करने के लिए तथा शक्ति दूसरों को पीड़ित करने के लिए होती है। जबकि सज्जन की ये सभी विपरीत

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

होती हैं। सज्जन की विद्या ज्ञान प्राप्ति के लिए, धन दान करने के लिए तथा शक्ति दूसरों की रक्षा करने के लिए होती है।

(3) न जातु दुःखं ------- मम करणीयम् ॥

प्रसङ्ग - प्रस्तुत पद्यम् अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'लोकहितं मम करणीयम्' इति शीर्षक पाठात् उद्धृतम्। अस्मिन् पद्ये संस्कृतगीतमाध्यमेन स्वस्य सुखदुःखयोः गणनां न कृत्वा लोकहिताय प्रेरणा प्रदत्ता।

व्याख्या- लोकहिताय प्रेरयन् कविः कथयति यत् मया कदापि दुःखानां गणना नहि कर्त्तव्यम्। तथा च स्वस्य सुखस्य विषये स्व मननं चिन्तनं वा नहि कर्तव्यम्। कर्म क्षेत्रे तु शीघ्रता कर्तव्या। मया सदैव लोककल्याणं कर्तव्यम्।

व्याकरणात्मक टिप्पणी- गणनीयम् - गण् + अनीयर्
मननीयम् - मन् + अनीयर्, त्वरणीयम् - त्वर् + अनीयर्
करणीयम् - कृ + अनीयर्।

(4) प्रथमा - वत्स एनं ------ तथा। (इति निष्क्रान्ता)

प्रसङ्ग - प्रस्तुत नाट्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'जृम्भस्व सिंह! दन्तास्ते गणयिष्ये' शीर्षक पाठात् उद्धृतः। मूलतः पाठोऽयं महाकविकालिदासेन विरचितस्य अभिज्ञानशाकुन्तलस्य सप्तमंकात् उद्धृतः। अस्मिन् विरचितस्य नाट्यांशे बालकस्य सर्वदमनस्य चञ्चलतां चञ्चलतायाः वर्णनं कृतम्।

व्याख्या-

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रथमा तापसी – पुत्र ! इमं सिंहशिशुं त्यज । तुभ्यम् अन्यं क्रीडनकं दास्यामि ।

बालः सर्वदमनः – कुत्रास्ति, एतत् क्रीडनकं ददातु । (इति कथयित्वा हस्तं प्रसारयति)

द्वितीया तापसी – हे सुव्रते ! अयं बालकः वाणीमात्रेण विरमयितुं समर्थः नास्ति । भवती गच्छतु मम कुटीरे ऋषिपुत्रस्य मार्कण्डेयस्य वर्णैः चित्रितः मृण्मयूरः वर्तते । तं मृण्यमयूरम् अस्य कृते आनयतु ।

प्रथमा – भवतु ! (इति कथयित्वा ततः गच्छति)

व्याकरणात्मक टिप्पणी – • देह्येतत् – देहि + एतत् (यण् सन्धि)

मृतिकामयूरस्तिष्ठति – मृतिकामयूरः + तिष्ठति (सत्व - विसर्ग सन्धि)

तमस्योपहर – तम् + अस्य + उपहर (हल् सन्धि, गुण सन्धि)

वर्णचित्रितः – वर्णैः चित्रितः (तृतीया तत्पुरुषः समास)

(5) (i) "जयसुरभारति !" इति पाठस्य रचयिता डॉ. हरिरामाचार्यः अस्ति ।

~~(ii)~~

(ii) "संघे शक्तिः" इति पाठानुसारेण "अद्य प्रातरेव अनिष्टदर्शनं जातम्, न जाने किम् अनभिमतं दर्शयिष्यति ।" इति 'लघुपतनकः' नाम वायसः कथितवान् ।

(iii) "स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः" इति कथनं भारत-देशे ~~प्रसूताय~~ प्रसूतस्य अग्रजन्मनः कृते अस्ति ।

(iv) महाराणा प्रतापस्य राज्याभिषेकः गोगुन्दा ग्रामे अभवत् ।

(vi) "मरुसौन्दर्यम्" इति पाठानुसारेण "शुष्कोऽपि नित्यं सरसः स देशः" इति ~~स~~ आचार्य चरकेण प्रशंसितः ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(vii) महाराजः सूरजमल्लः महाराजा बदनसिंहस्य ज्येष्ठपुत्रः आसीत्।

6) का परमो धर्मः ?

7) पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति ?

8) एतेन कस्य न अपमानः ?

9) केषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत् ?

10) धन-धान्य प्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे- व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्॥

गुणैः गौरवमायाति नोच्चैः आसनमास्थितः।
प्रासादशिखरस्थोऽपि काको न गरुडायते॥

(11) (क) 'विश्वबन्धुत्वम्'

(ख) (i) दैनन्दिनव्यवहारे यः सहायतां करोति सः बन्धुः भवति।

(ii) समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति।

(iii) अधुना संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति।

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(iv) सर्वेषु समत्वेन प्रकृतिः व्यवहरति।

(v) सूर्यचन्द्रयोः प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेणं प्रसरति।

(ग) (i) मानवाः

(ii) आवश्यकता

(iii) मानवाः

(iv) उपरि

(12)

पदः	सन्धिविच्छेदः	सन्धेः नाम
(i) स्वागतम्	सु + आगतम्	स्वर - यण् सन्धिः
(ii) दिग्गजः	दिक् + गजः	हल् - जश्त्व सन्धिः

(13)

पदः	सन्धिः	सन्धेः नाम
(i) पो + अनः	पवनः	स्वर- अयादि सन्धिः
(ii) रामः + च	रामश्च	विसर्ग- सत्व सन्धिः।

(14)

(i) प्रतिवारं - वारं वारं प्रति - अव्ययीभाव समासः

(ii) महाराजः - महान् चासौ राजा - कर्मधारय समासः

(iii) माता च पिता च - मातापितरौ - द्वन्द्व समासः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(15) (i) 'ग्रामं' पदे 'परितः' योगे द्वितीया विभक्तिः अस्ति।

(ii) 'गीतया' पदे 'सह' योगे तृतीया विभक्तिः अस्ति।

(iii) 'नगरात्' पदे 'पृथक्' शब्दयोगे पञ्चमी विभक्तिः अस्ति।

(16) (i) प्रसन्नो बालकः शंकमानः।

(ii) पठन् गोपालः गच्छति।

(17) (i) ज्ञानवान् = ज्ञान + मतुप्

(ii) चटका = चटक + टाप्

(18) (i) सूर्यः अग्निगोलकः इव प्रतिभाति।

(ii) यत्र गच्छति तत्र तिष्ठति।

(iii) कार्यस्य सहसा निर्णयं न करणीयम्।

(19) त्वया पाठः लिख्यते।

(20) रामः पुस्तकं पठति।

(21) अहं साधुं पश्यामि।

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(22) (क) सीमा प्रातः दशकलाधिक-नववादने विद्यालयं गच्छति।

(ख) सा पुनः पञ्चकलाधिक-त्रिवादने गृहं आगच्छति।

(23) (i) बालिकात्रयाः प्राह प्रतिदिनम् उपवनं गच्छन्ति।

(ii) चतुष्पथे बलिवर्दाः कलहं कुर्वन्ति।

(iii) शिष्यैः गुरवे निवेदयति।

(24)

जामनगरतः
दिनाङ्कः : 18 मार्च 2018

परमपूजनीयेषु पितृचरणेषु

सादरं प्रणतयः सन्तु। भवतां पत्रमधिगतम्। समाचारान् अधीत्य मे मनः भृशम् मोदतेतराम्। मई मासे अस्माकं परीक्षा सम्पत्स्यते। सम्प्रति अध्ययनकर्म सम्यक् चलति। संस्कृतव्याकरणं विहाय सर्वेषु विषयेषु दक्षतामापन्नोऽस्मि। व्याकरणस्यापि न्यूनतां शीघ्रमेव अपनेष्यामि। मातरं प्रति मे सादरं प्रणतयः। अन्यत् कुशलम्।

भवत्कः सुतः
रमेशः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(25) पुनीतः - सुरेश ! त्वं कुत्र गच्छसि ?
सुरेशः - पुनीत ! त्वम् अपि आगच्छ ।
पुनीतः - अरे ! तत् किं भवनम् अस्ति ।
सुरेशः - तत् चिकित्सालयभवनम् अस्ति । आवाम् अपि मातुलं द्रष्टुं चलावः ।
पुनीतः - सः केन रोगेण पीडितः अस्ति ।
सुरेशः - सः उच्चरक्तचापेन पीडितः अस्ति ।
पुनीतः - ते श्वेतप्रावारकधारकाः के सन्ति । ते किं कुर्वन्ति ?
सुरेशः - ते चिकित्सकाः सन्ति । ते उपचारं कुर्वन्ति ।

(26) (i) माता पुत्राय उपदिशति ।

(ii) महां फलानि सेक्ते रोचन्ते ।

~~(iii)~~ (iv) कक्षात् बहिः शिक्षकाः सन्ति ।

(v) तं विना त्वं नहि गच्छसि ।

~~(vi) तैः सह सुनीता~~

प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(27) (i) शीतलः पवनः मन्दं मन्दं प्रवहति।

(ii) सर्वत्र सुरभितकुसुमानां सुगन्धः प्रसृतः अस्ति।

(iii) कुसुमाकरः वसन्तः समागतः अस्ति।

(iv) भारते षट् ऋतवः भवन्ति।

(v) तेष्वयं वसन्तः श्रेष्ठः अस्ति।

(vi) वसन्ते उद्यानानाम् शोभा दर्शनीया भवति।

(28) (iv) पुरा एकस्मिन् वने एका चटका प्रतिवसति स्म।
(v) कालेन तस्याः सन्ततिः जाता।
(i) एकदा कश्चित् प्रमत्तः गजः तत्र आगतवान्।
(vi) वृक्षस्य अधः आगत्य तस्य शाखां शुण्डेन अत्रोटयत्।
(iii) चटकायाः नीडं भुविः अपतत्, तेन अण्डानि विशीर्णानि।
(ii) अथ सा चटका व्यलपत्।

— समाप्त —